झालावाड़ की प्राचीन मूर्तिकला में “लक्ष्मी के अद्भुत स्वरूप”

- लेखक : ललित शर्मा
- तारीख : November 02, 2026

कोटा सम्भाग के पुरातत्त्व, इतिहास और कला जगत में दीपावली की प्रमुख देवी लक्ष्मी की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इन्हें आज भी बाराँ, बून्दी और कोटा के प्राचीन देव मन्दिरों तथा संग्रहालयों में देखा जा सकता है। झालावाड़ भूभाग में भी देवी लक्ष्मी के कुछ ऐसे प्राचीन, अप्रकाशित और विशिष्ट मूर्ति स्वरूप मिलते हैं, जो यहाँ के मन्दिरों और संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। इन मूर्तियों की कला शैली और भावाभिव्यक्ति उन्हें विशेष बनाती है। इनमें से कुछ प्रतिमाएँ अभी तक पुराविदों और शोधार्थियों के व्यापक अध्ययन से अपेक्षाकृत दूर रही हैं। प्रस्तुत लेख में देवी लक्ष्मी के ऐसे ही दो उल्लेखनीय मूर्ति स्वरूपों का परिचय दिया गया है।

गजलक्ष्मी की प्रतिमा

देवी लक्ष्मी की उत्पत्ति क्षीरसागर से मानी जाती है। गजलक्ष्मी स्वरूप में वे पद्मपीठ पर प्रतिष्ठित रहती हैं और गज, अर्थात हाथी, जलघटों से उनका अभिषेक करते हैं। इसी कारण यह स्वरूप ‘गजलक्ष्मी’ कहलाता है। प्राचीन मन्दिरों में गजलक्ष्मी की अनेक प्रतिमाएँ मिलती हैं, लेकिन झालावाड़ जिले की झालरापाटन नगरी में स्थित 11वीं सदी के शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में स्थापित गजलक्ष्मी की प्रतिमा विशेष उल्लेखनीय है।

गजलक्ष्मी

मन्दिर के मूल गर्भगृह की बाहरी उत्तरी शुकनासा के निकट लाल पाषाण खण्ड पर निर्मित यह प्रतिमा स्थापित है। इसकी शैली 11वीं सदी की परमारकालीन मूर्तिकला परम्परा से साम्य रखती है और हाड़ौती तथा मालवा क्षेत्र की गजलक्ष्मी प्रतिमाओं में इसका विशिष्ट स्थान है। प्रतिमा में देवी लक्ष्मी पद्मासन मुद्रा में चतुर्भुजी हैं और पूर्ण विकसित कमल पर विराजमान हैं। उनके दोनों ऊर्ध्वकरों में पद्मपुष्प हैं। इन पुष्पों पर दो गज अपनी सूँड़ों में जलकलश धारण किए देवी का अभिषेक करते हुए दिखाए गए हैं।

देवी का मुखमण्डल सौम्य है। उनके मस्तक पर राजसी मुकुट, कानों में कुण्डल और ग्रीवा से नाभि तक आती मणिमाला तथा मुक्ताहार का अलंकरण दिखाई देता है। पैरों में कड़े और पायजेब, भुजाओं में भुजबन्ध तथा हाथों में चूड़ियों का अंकन है। उनके अधोकरों में क्रमशः बाएँ हाथ में अक्षमाला और दाएँ हाथ में पवित्र जलघट दर्शाया गया है। प्रतिमा का अलंकरण और शैली 11वीं सदी की मूर्तिकला के लक्षणों से साम्य रखती है। चूँकि मन्दिर का मूल स्थापत्य भी परमारकालीन माना जाता है, इसलिए गर्भगृह की बाहरी शुकनासिका पर स्थापित इस प्रतिमा को भी उसी काल से सम्बन्धित माना जा सकता है।

झालरापाटन का प्राचीन शान्तिनाथ मन्दिर

कल्पवृक्ष पीठ पर विराजमान लक्ष्मी

झालावाड़ संग्रहालय में सुरक्षित देवी लक्ष्मी की एक अन्य प्रतिमा भी विशेष महत्त्व रखती है। इसमें देवी लक्ष्मी कल्पवृक्ष की पीठिका पर विराजमान हैं। यह प्रतिमा झालावाड़ के निकट रंगपाटन से प्राप्त हुई है और रक्त पाषाण खण्ड पर निर्मित है। इसे 10वीं सदी का माना गया है। इसका आकार लगभग 55 गुणा 48 सेमी है।

प्रतिमा का अंकन दो स्तम्भयुक्त रथिकाओं के मध्य किया गया है। देवी के दोनों ऊर्ध्वकरों में पूर्ण विकसित पद्मपुष्प हैं। अधोकरों में दक्षिण हाथ में लघुकमल और वाम हाथ में सनाल कमल का अंकन है। देवी लक्ष्मी ललितासन में विराजमान हैं और उनका मुखमण्डल सौम्य है। मस्तक पर जूट के ऊपर अर्द्धचन्द्राकार अलंकृत मुकुट, कानों में लम्बे कुण्डल और ग्रीवा में तीन लड़ियों वाला हार अंकित है। उसके मध्य से कटिप्रदेश तक लटकती मणिमाला भी दिखाई देती है।

देवी लक्ष्मी की प्रतिमा

दोनों भुजाओं में भुजबन्ध और हाथों में कड़ों का सुन्दर अलंकरण किया गया है। देवी के पार्श्व भागों में दो पद्मधारिणी परिचारिकाएँ भी अंकित हैं, जिन्हें आभूषणों से अलंकृत दिखाया गया है। कल्पवृक्ष की पीठिका पर लक्ष्मी का यह स्वरूप प्रतिमा को विशिष्ट बनाता है। यह मूर्ति केवल देवी के धार्मिक स्वरूप को ही नहीं, बल्कि उस काल की कलात्मक कल्पना और शिल्प कौशल को भी सामने लाती है।

झालावाड़ की लक्ष्मी प्रतिमाओं का महत्त्व

झालावाड़ की प्राचीन मूर्तिकला में देवी लक्ष्मी के ये दोनों स्वरूप क्षेत्र की समृद्ध कला परम्परा को समझने में उपयोगी हैं। गजलक्ष्मी प्रतिमा जहाँ अभिषेक और समृद्धि के पारम्परिक रूप को सामने लाती है, वहीं कल्पवृक्ष पीठ पर विराजमान लक्ष्मी की प्रतिमा अपने विशिष्ट आसन और अलंकरण के कारण अलग पहचान रखती है।

झालावाड़ संग्रहालय की मूर्तिकला

इन प्रतिमाओं का अध्ययन हाड़ौती और मालवा क्षेत्र की मध्यकालीन मूर्तिकला, धार्मिक प्रतीकों और शिल्प परम्पराओं को समझने में महत्त्वपूर्ण हो सकता है। झालावाड़ के मन्दिरों और संग्रहालयों में सुरक्षित ऐसी कलानिधियाँ क्षेत्र की पुरातात्त्विक और सांस्कृतिक विरासत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं।

लेख-
ललित शर्मा
इतिहासकार, झालावाड़